भारत में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति चुनौतियां एवं संभावनाएं

राजेश कुमार
सहायक आचार्य - हिंदी
केपी.कॉलेज ऑफ आर्ट एंड साइंस, आहोर

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा की जो शब्दावली है जो ज्ञान—विज्ञान और वर्तमान समय की नई—नई तकनीको को व्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं। हिन्दी भाषा में यह गुण होते हुए भी आज के ज्ञान—विज्ञान और उच्चशिक्षा प्राप्त करने का माध्यम हिन्दी भाषा नहीं बन पा रही हैं। इस क्षेत्र में कुछ अपवादों के कारण अंग्रेजी भाषा ही अपना पाँव पसारे हुएँ हैं। हिन्दी भाषा में ज्ञान—विज्ञान और उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए पुस्तको का अभाव हैं। हिन्दी भाषा में जितने भी लेखक या रचनाकार हैं। उन्होने साहित्य के क्षेत्र में, कथाएँ, काव्य जैसे अनेक क्षेत्रों में काव्य, ग्रंथ एवं कई प्रकार की रचनाएँ की हैं, लेकिन ज्ञान—विज्ञान के क्षेत्र में और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में इनके द्वारा लिखि गई पुस्तको की बहुत कमी हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए इन लेखको की कलम चलना अति आवश्यक हैं, यदि ज्ञान—विज्ञान और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में पुस्तको को लिखि जायेगी तो यह पुस्तके पर्याप्त मात्रा में प्राप्त की जा सकेगीं। इससे हिन्दी भाषा का क्षेत्र व्यापक होगा, और ज्ञान—विज्ञान और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने में भी आसानी होगी।
स्वतन्त्रता प्राप्त होने के 70 वर्ष हो चुके हैं। इसके बाद भी हिन्दी भाषा को जो संविधान द्वारा अधिकार दिये गये हैं, उन अधिकारो से हिन्दी वंचित हैं। वह अधिकार आज भी हिन्दी भाषा को नहीं मिले हैं। आजादी के इतने सयम के बाद अभितक तो हिन्दी को राजभाषसा बन जाना चाहिए था, लेकिन हमारे दुर्भाग्य के कारण आज भी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी ही बनी हुई हैं। हमारी मातृभाषा होने के बाद भी बार—बार लोगों को हिन्दी भाषा का महत्व याद दिलाना पढ़ता हैं। आज के समय में देश के कौने—कौने में हिन्दी पहुंच चुकी हैं, और सारी दुनिया में हिन्दी भाषा अपना पाँव पसार चुकी हैं। हमारे देश की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही हैं। हिन्दी में ग्रहणशीलता की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति हैं। हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं से आये शब्दों को पचा लेने की एक अद्भुत क्षमता हैं। अन्य भाषाओं और बोलियों से आये हुऐ शब्द ग्रहण करने के बाद भी हिन्दी के स्वरूप में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन या बदलाव देखने को नहीं मिलता हैं। यह हिन्दी का एक अद्भुत लक्षण हैं। अन्य किसी भाषाओं में नजर नहीं आता, हिन्दी भाषा का क्षेत्र बड़ा व्यापक हैं। अन्य भाषाओं में उन्नतशीलता के दृष्टिकोण से परिवर्तन बड़ी धीमी गति से होता हैं, जबकि हिन्दी भाषा में परिवर्तन की गति बहुत तेज एवं आधुनिकता पर आधारित हैं।

यह तो निष्चित हैं, कि हिन्दी भाषा का विकास होना हैं। हिन्दी में प्रतिदिन नई—नई तकनीके देखने को मिल रही हैं। हिन्दी के नये—नये सफ्टवेयर बनाये जा रहे हैं। इस संचार क्रान्ति ने हिन्दी भाषा के प्रति हमारे मन की वर्षो पुरानी सोच को बदलकर रख दी हैं। इस बात को ध्यान में रखकर हिन्दी भाषा के प्रति हमारे मन में जो विचार हैं उन्हें प्रस्तुत करने होगें, ताकी वर्तमान समय में हिन्दी भाषा का विकास आधुनिकता से हो सके और हिन्दी भाषा समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल सके, साथ ही साथ तीव्रता से विकास भी कर सके।
''कुछ कार्यालयों में हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह/हिन्दी पखवाड़ा के नाम पर कवि सम्मेलन, मुशायरा अथवा कहानी पाठ का आयोजन किया जाता हैं। इस प्रकार के आयोजनों से हिन्दी को कामकाज की भाषा बनाने में कोई सहायता नहीं मिलेगी।''1 हमारे हिन्दी भाषी समाज में हिन्दी के प्रति किसी प्रकार का कोई हिन्दी भाषा गौरव का ज्ञान नहीं हैं। साथ अधिकतर लोगों को हिन्दी भाषा के क्या महत्व हैं, इस बात का ही ज्ञान नहीं हैं। हिन्दी भाषा हमारी मातृभाषा हैं, हमारी राजभाषा हैं। इस बात की और किसी का ध्यान ही नहीं जाता। बस इतना मानते हैं कि हिन्दी हमारा एक विषय हैं और हिन्दी को एक विषय के रूप में ही देखते हैं। हिन्दी के प्रति हमारे जो कर्तव्य हैं, उन कर्तव्यो का कोई ध्यान ही नहीं रखते हैं। इस लिए हमें हिन्दी भाषा के प्रति सचेत होकर विकास के हर सम्भव कार्य कर हिन्दी भाषा के गौरव को और आगे बढ़ाना चाहिए। हिन्दी क्षेत्र के अधिकतर लोग अशुद्ध हिन्दी बोलते हैं। परन्तु कई ऐसे व्यक्ति भी जो हिन्दी भाषा का ज्ञान कम रखते हैं। या कई व्यक्ति हिन्दी का बिल्कुल ही ज्ञान नहीं रखते। ऐसे लोग कोई व्यक्ति हिन्दी बोलने में जरासी भी गलती कर दे तो यह अज्ञानी लोग उस व्यक्ति की खिल्ली उड़ाने लगते हैं और अपनी विद्वानता को बताने लगते हैं। ऐसा करके वह व्यक्ति अपनी हिन्दी का ही नुकसान करते हैं। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में अपना कार्य करने वाल व्यक्ति हिन्दी भाषा का उच्छा ज्ञान रखते हुए भी गलती होने के भय से हिन्दी में कार्य नहीं करते। इस प्रकार अज्ञानियों को अपनी सोच बदलनी होगी और जो व्यक्ति गलती होने के भय से कार्य नहीं कर पाते उनके भय को दूर कर निरन्तर हिन्दी भाषा में प्रयास करने को बढ़ावा देना अति आवश्यक हैं।
''देश के 11 राज्यों ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी हैं। यदि इन राज्यों में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में ही हिन्दी को पूर्ण रूप से कामकाजी की भाषा बना दिया जाए तो आधे भारत में हिन्दी लागू हो जाएगी जिसका प्रभाव अन्य

हिन्दीतर राज्यों पर भी पड़ेगा।''2 इन प्रदेशों की जनता भी यदि मिलकर हिन्दी भाषा की मांग करे और प्रयास करे कि हमारे जो भी शासकीय हो या प्रशासकीय सभी कार्य हिन्दी भाषा में ही किये जाये। यदि ऐसा होता हैं, तो हमारी हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने में कोई अधिक समय नहीं लगेगा और अंग्रेजी का खात्मा बड़ी आसानी से हो जायेगा। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह हैं, जिन राज्यों की राजभाषा हिन्दी हैं, वह भी हिन्दी के प्रति निष्क्रिय और अनजान से हैं। इससे हमारी हिन्दी का महत्व कम होता जा रहा हैं। वर्तमान में राज्यों की ऐसी स्थिती हैं कि राज्य तो हिन्दी भाषी हैं। लेकिन हिन्दी भाषा पर ध्यान न देकर कक्षा पहली से अंग्रेजी सीखना अनिवार्य विषय कर दिया हैं। ऐसा भाषा के प्रति हमारी अज्ञानता के कारण ही हो रहा हैं। हमारी, प्रशासन की सोच को बदलना होगी और हिन्दी के प्रति कर्तव्यबद्ध होना पड़ेगा, अन्यथा हमारी हिन्दी भाषा यू ही अन्धकार में रहेगी।

''2011 की जनगणना के अनुसार इन ग्यारह हिन्दी भाषी प्रदेशों की कुल जनसंख्या 46,31,74,319 हैं जो देश की कुल जनसंख्या (1,02,70,15,247) से आधी से कम हैं।''3 हिन्दी अब कमाऊ भाषा बन चुकी हैं। हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा जब मिला उस समय किसी ने यह अनुमान भी नहीं लगाया होगा कि हिन्दी भाषा भी एक कमाऊ भाषा बनेगी। लेकिन आज के समय में हिन्दी भाषा में बड़ी–बड़ी नौकरियाँ मिलरही हैं। हिन्दी भाषीयों को भी अब पॉच हजार से लेकर पॉच लाख तक की नौकरियाँ मिल सकेगी। इससे यह पता चलता हैं कि हिन्दी भी एक कमाऊ भाषा हैं। आज हर क्षेत्र में हिन्दी का महत्व बढ़ रहा हैं। टेलीविजन एवं रेडियो पर कई चैनल 24 घण्टे हिन्दी के कार्यक्रम की प्रस्तुती दे रहे हैं। ऐसी कोई भी कम्पनी नहीं हैं। जिसने हिन्दी भाषा में विज्ञापन न दिया हो। जब तक हिन्दी भाषा में विज्ञापन नहीं देंगे उनकी कोई भी सामग्री बिक्रि हो ही नहीं सकती। इससे यह पता लगता हैं, कि हिन्दी भाषा ही देश की जान हैं, और लोगों की जरूरत भी हिन्दी ही हैं।

''श्लोक पर पेन रखते ही सुने हिन्दी भावार्थ''4 वर्तमान समय में हिन्दी भाषा विकास की चरम सीमा को प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा, क्योंकि आधुनिक तकनीक में ऐसा पेन बनालिया हैं। जिन्हे किसी भी संस्कृत या अन्य भाषा के श्लोक हो उन पर पेन रखकर घुमाने से वह पेन हिन्दी में उस श्लोक का अनुवाद करके सुनाता हैं। यह करिश्मा 10 वॉ हिन्दी विश्व सम्मेलन भोपाल के ही आदर्श प्रकाशन ने प्रकाशित किया हैं। भागवत कथा को हिन्द में सुनने के लिए एक पेन का निर्माण किया, जिसे टाकिंग पेन नाम दिया गया हैं। इस पेन को भागवत कथा के श्लोको पर घुमाने से यह पेन भागवत कथा का हिन्दी अनुवाद करके हमें सुनाता हैं। यह हिन्दी का नया आविष्कार ही तो हैं। इस प्रकार हिन्दी का महत्व दुनिया में बढ़ता जा रहा हैं।

''हिन्दी व्याकरण की गलती पता चलेगी''5 महात्मा गाँधी हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा ने एक ऐसा सॉफ्टवेयर का निर्माण किया हैं जो हिन्दी में लिखते ही व्याकरण की गलती पकड़ लेगा। विश्वविद्यालय ने वाक्यों का विश्लेषण करने वाला सॉफ्टवेयर भी तैयार किया हैं। इसमें वर्ड पेड पर हिन्दी में वाक्य लिखते ही यह सॉफ्टवेयर यह बता देगा कि कौन सा शब्द संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण हैं, साथ में ऐसे सॉफ्टवेयर का निर्माण भी कर लिया गया हैं। यदि कोई रिसर्चकर्ता अपनी रिसर्च में कही से किसी प्रकार की कॉपी करता हैं, तो वह सॉफटवेयर तुरन्त बतादेगा की यह कॉपी किया हैं। इस प्रकार हिन्दी भाषा में अनेक प्रकार के ऐसे अविष्कार हो गये जो हिन्दी का महत्व और अधिक बड़ा देते हैं। इससे हिन्दी की सुदृढ़ स्थिति का भी ज्ञान होता हैं। आज हिन्दी हमारे भारत देश में ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में भी लोक प्रिय हो रही हैं। हिन्दी भाषा अन्य देशो में लोक प्रिय हो रही हैं इस बात का ताजा प्रमाण यह हैं कि ''भारत के लगभग 170 स्वयंसेवी संगठन हिन्दी प्रचार–प्रसार एवं संवर्धन निष्ठा के सांथ एवं अधिक सुनियोजित ढंग से कार्य कर रहे हैं।''6

संसार में कुल मिला कर लागभग 2800 भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं में से 13 भाषाएँ ऐसी हैं जिन्हे बोलने वालो की संख्या लगभग 8 कारोड़ से अधिक हैं। प्राप्त ताजे आंकड़ो के अनुसार संसार की कुल भाषाओं में बोलने के आधार पर हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा हैं। जो सबसे अधिक बोलीजाने वाली भाषाओं में हिन्दी भाषा दूसरे नम्बर की भाषा हैं। हिन्दी भाषा एक ऐसी है जो भारत के बाहर ऐसे कई देश हैं, जहॉ हिन्दी भाषा बहुलता में बोली जाती हैं। जैसे– बर्मा, श्रीलंका, फिजी, मलाया, दक्षिण अफ्रिका एवं पूर्वी अफ्रिका आदि। एशिया महाद्वीप की भाषाओं में हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा हैं। जो अपने देश के बाहर बोली जाती हैं और लिखी भी जाती हैं। क्योंकि हिन्दी भाषा एक जीवित भाषा हैं। ताजा आंकड़ो के अनुसार भारत में हिन्दी भाषा जानने वाले व्यक्तियों की संख्या 100 करोड़ हैं और भारत के बाहर भी ऐसे कई देश हैं जहॉ हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता हैं। वह देश इस प्रकार हैं– पाकिस्तान, इजराइल, ओमान, इक्वाडोर, फिजी, इराक, बांग्लादेश, ग्रीस, ग्वाटेमाल, म्यांमार, यमन, त्रिनीदाद, साउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, मॉरिशस, सूरीनाम, गुनाया, इंग्लैण्ड आदि देशों में भी हिन्दी भाषा बोली जाती हैं।

इस प्रकार हम हिन्दी का अध्ययन करके देखे तो पता चलता हैं कि हिन्दी भाषा इतनी सुदृढ़ स्थिति में होते हुए भी हिन्दी भाषा अपने अधिकारो से वंचित हैं। हिन्दी भाषा एक राष्ट्रभाषा बनने की अधिकारी है। ऐसा होते हुए भी हिन्दी पूर्ण रूप से राजभाषा भी नहीं बन सकी क्योंकि हमारे राजकीय कार्य भाषा आज भी अंग्रेजी ही हैं। यदि हमने हमारी भाषा के प्रति आज चिन्तन नहीं किया तो आगे भी हम इसी तरह अंग्रेजी के गुलाम बने रहेगें। आंदोलन चलाना चाहिए हर राजकीय कार्य हिन्दी भाषा में ही किया जाना चाहिए। अंग्रेजी का नामोनिशान नहीं आना चाहिए। तब हिन्दी स्वतन्त्र भाषा होगी

और हमारी हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने की अधिकारी हैं। हिन्दी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बने इसके हर सम्भाव कार्य करेगे।

हिन्दी सिनेमा और हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संचार

राज कपूर साहब ने इस हिन्दी भाषा के बीज को अंकुरित किया और विदेशों में विशेष रूप से रूस, चीन, और जापान में हिन्दी सिनेमा को विशाल रूप देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। सन् 1951 में आई फिल्म ''आवारा'' ने रूसियो, चिनियों और जापानियों को हमेशा के लिए उनको दिवाना बना लिया। ''श्री 420 फिल्म के एक गाने में तो हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर से अपना रूप प्रस्तुत कर दिया हैं।''7 और दुनिया के सामने अपना रूप उजागर किया हैं। इस गाने में कहा गया हैं। कि मेरा जूता है जापानी,ये पतलून इग्लिसतानी, सिर पर लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी। इस गाने की वजह से यह फिल्म अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी प्रसिद्ध हुई और हिन्दी भाषा का बढ़ा विकास किया। अब, कई देशों में हिन्दी फिल्में इतनी अधिक पसंद की जाने लगी हैं कि वे अग्रेंजीतर भाषाओं में भी सीधे डब होकर, 2013 में जापान में दिखाई गई, जिसे जापानियों ने खुशी से देखा। देश–विदेश के टी. वी. चैनलों पर दिखाया जाने वाला हिन्दी सिनेमा अन्य देशी–विदेशी भाषाओं में डब होकर सफलतापूर्वक दिखाया जा रहा हैं। इस प्रकार सिनेमा के द्वारा हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा ही योगदान हैं।

हिन्दी भाषा पत्रकारिता की भाषा

सन् 1991 से 2016 तक के अरसे के हिन्दी समाचारपत्रों के विकास का एक अध्ययन बतलाता हैं कि इस अवधि में हिन्दी पत्रों की प्रचार संख्या 55 प्रतिशत बढ़ी हैं, यह बड़ोतरी अनछुए पाठक वर्ग में हुई हैं। यद्यपि अभी 25 करोड़ पाठक हिन्दी भाषा को पड़ने वाले हैं। इसका मतलब यह हैं कि हिन्दी भाषा की पत्रकारिता बड़ने की गुंजाइश और भी हैं। हिन्दी समाचार पत्रो में तरह–तरह के इनामी योजनाएँ और उपहारो कि वजह से हिन्दी का महतव और बढ़ा हैं और समाचार पत्र प्रकाशित करने वाले व्यक्तियों का भी विकास हुआ हैं। पत्रकारिता के बाजार में विज्ञापन का हिन्दी में बढ़ा योगदान रहा हैं। मीडिया में एक वर्ग ने ऐसे जन्म लिया हैं जो दृंडता, स्वतन्त्रता, स्वच्छंदता बड़ा और बड़प्पन के बीच कोई भेद नहीं करता और वास्तविकता को प्रस्तुत करने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ता। किसी भी सम्पादक की कलम में इतनी ताकत हैं कि किसी भी पत्थर को भगवान और भगवान को पत्थर बना दे। इस ताकत का पत्रकारिता में हिन्दी भाषा को भरपूर फायदा मिला हैं। ध्यान रहे कि प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया हैं लेकिन संविधान में चौथा स्तंभ नहीं कहा गया हैं। यह लोकमान्य हैं और लोकमान्यता अर्जित करना जिसके पुरूषार्थ का काम हैं।
हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जिस भाषा और जिस शब्दावली को हम त्याग देते हैं, उसमें रचा गया ज्ञान भी हमारे लिए अपरिचित हो जाता हैं। इससे स्पष्ट हो जाना चाहिए कि जो लोग हमारी भाषा को अपवित्र करने और दमन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे हमसे क्या छिनना चाहते हैं। यह एक विचारनीय बात हैं। वे हमारे ज्ञान के साथ–साथ अपनी संस्कृति से भी वंचित करना चाहते हैं। वह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम संसार के सबसे दीन–हीन और अज्ञानी लोग हैं। जिसके पास अपना कुछ भी नहीं हैं। लेकिन वह लोग भूल जाते हैं कि हिन्दी भाषा दुनिया में दूसरे नम्बर की बोली जाने वाली भाषा हैं और हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने वाली हैं। इस लिये डरे हुए लोग ही अपने मन में इस प्रकार की सोच रखते हैं। आज के समय में प्रत्येक स्थान पर अंग्रेजी का महत्व कम कर हिन्दी का महत्व बढ़ गया है और यदि हमें हमारी हिन्दी भाषा को आगे बढ़ाना हैं तो एक ऐसी क्रान्ति लाने की आवश्यकता हैं । जिससे दुनिया अचंभित रह जाये। यह एक लेखक, कवि, नेता या राजपत्रित अधिकारी नहीं कर सकता बल्कि सम्पूर्ण भारत हिन्दी भाषी लोग मिलकार एक साथ पहल करे।

इंटरनेट पर हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति

हिन्दी भाषा हम सबकी भाषा हैं और हम सब हिन्दी भाषा का ही प्रयोग कर रहे हैं। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि वास्तविक रूप से हिन्दी भाषा ही हम सबकी भी भाषा ही हैं। यदि हम वेब दुनिया में जाकर इंटरनेट पर नजर डाले तो यहाँ पर कई शब्द फूलो के समान खिले हुए हैं और हिन्दी भाषा का गौरव बढ़ा रहे हैं। इसके साथ–साथ हिन्दी भाषा के प्रति इंटरनेट पर अनेक प्रकार के भ्रम, भ्रांतियाँ और भड़काने वाले बयान सामने आ रहे हैं कि आजादी के 69 वर्षो के बाद भी हम उसी समस्या में आ कर घिर गये हैं कि हमारी हिन्दी भाषा का स्थान कहाँ हैं। अंग्रेजी भाषा के बाद या अन्य भारतीय भाषाओं के बाद पिछले दिनों हैदराबाद में इंटरनेट गवर्नंस फोरम में इंटरनेट पर भारतीय भाषओं की उपस्थिति पर सवाल उठा। ''कि इंटरनेट यूजर किस भाषा के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं। जवाब मिला 99 प्रतिशत लोग अंग्रेजी भाषा यूजर को महत्व देते हैं।''8 इसके अलावा कई और भी ऐसे सवाल भी हैं जैसे भारतीय कौन सी भाषा सीखना चाहते हैं? तथा एक सवाल यह भी उभरकर सामने आता है कि भारतीय मूल के व्यक्ति इंटरनेट पर सम्पर्क भाषा के रूप में कौन सी भाषा का उपयोग करते हैं ? यदि हिन्दी भाषा का जवाब सामने आता है तो देखने में यह आया हैं कि हिन्दी भाषा का इंटरनेट पर हिन्दी के स्तर की हिन्दी में सामग्री उपलब्ध है या नहीं हैं। इसपर हमारा ध्यान आकर्षित करने पर

देखने में यह आता हैं कि जवाब में अंग्रेजी ही अपना अधिकार जमाये हुए हैं। जबकी आजादी के 69 वर्षो बाद तो हिन्दी को अपना स्वतन्त्रता का अधिकार मिलना ही चाहिए था। लेकिन नहीं वहॉपर अंग्रेजी ही जमी हुई हैं। हिन्दी भाषा को अपना गौरव प्राप्त करवाने के लिए कई ऐसे हिन्दी विद्वानों ने लम्बी लड़ाई लड़ी हैं और आज भी प्रयासरत हैं। ''श्यामरूद्र पाठक जैसे भाषा सेनानी आज भी अपनी भाषा के लिए जेल जाना पसन्द करते हैं।''9 श्यामरूद्र जैसे महान विद्वान और भाषायी क्रांतिकारी कौन हैं। इस प्रकार के प्रश्नो पर बवाल खड़ा करना हिन्दी प्रेमियों को बिलकुल भी सोभा नहीं देता हैं। फिर भी संक्षिप्त रूप में बतादेते हैं कि अपनी भाषा हिन्दी को अपना वास्तविक अधिकार दिलाने के लिए ऐतिहासिक लड़ाई लड़ने वाले श्यामरूद्र पाठक को सरासर गलत, झूठे आरोप लगाकर तिहाड़ जेल भेज दिये गये और वहॉ तिहाड़ जेल में उन्हें सामान्य केदियों के साथ रख कर प्रताड़ित किया गया और उन्हें 24 जुलाई को अदालत में पेस किया गया। यदि इस प्रकार हिन्दी भाषा प्रेमियों को यह सोचने वाली बात ही तो हैं। हमारी शासन प्रणाली कितनी बिगड़ चुकी हैं। सभी हमारी हिन्दी हमारी हिन्दी करते लेकिन इस बात पर कोई विचार नहीं किया गया कि आज भी हिन्दी भाषा अंग्रेजी भाषा की ही गुलाम हैं। अगर कोई इस गुलामी के खिलाफ आवाज उठाये तो उस आवाज पर गोर करना चाहिए न की दबाना चाहिए। इस प्रकार हमारी हिन्दी भाषा की इंटरनेट के माध्यम से स्थिति का ज्ञान होना हमारी भाषा का आईना सिद्ध होता हैं। जो एक विचारणीय बिन्दु हैं। क्योंकि हम हमारी हिन्दी भाषा चिल्लाते रहते हैं। और प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हमें हिन्दी की बहुत याद आती हैं और इस दिन हम बड़े–बड़े वादे करते हैं। चिन्ता करते हैं। और हिन्दी की बड़ी याद आती हैं। जैसे आज के दिन अगर भाषा के लिए आवाज न उठाई गई तो भाषा लुप्त ही हो जायेगी। विडम्बना इस बात की हैं कि एक तरफ श्यामरूद्र जैसे लोग बड़े लम्बे समय के बाद मिडिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाते हैं और दूसरी ओर रेडीफ डॉट कॉम के सीईओ अजीत बालाकृष्णन कह रहे हैं कि पिछले दस सालो के इंटरनेट के आँकडो को प्रमाण मानकर कहा जा सकता हैं कि यूजर भारतीय भाषाओं को नहीं चाहते हैं। यह सोच हमारे लिए दुर्भाग्य की बात ही तो हैं। जबकि आम और तमाम धारणाओं के विपरित हिन्दी भाषा का स्थान और वर्चस्व प्रशंसनीय होकर तेजी से बढ़ रहा हैं। और हिन्दी को बढ़ाने का हर सम्भव कार्य प्रत्येक भारतीय और हिन्दी प्रेमियो को मिलकर देश दुनिया में करना चाहिए।

वास्तविकता यह हैं कि इंटरनेट पर हिन्दी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं के पसन्द करनेवाले और पढ़ने वाले पाठको की बड़ी तेजी से वृद्धि हुई हैं। यह हो सकता हैं कि अंग्रेजी भाषा की तुलना में हिन्दी भाषा का प्रतिशत कम हो, लेकिन इससे दुनिया में हिन्दी भाषा के पाठको की बढ़ती संख्या और हिन्दी का महत्व कम नहीं हो जाता हैं। यह हो सकता है कि हिन्दी की वेबसाइट्स अपनी सामग्री को अंग्रेजी भाषा की तरह चमक–दमक के साथ पेश नहीं कर पा रही हो लेकिन हिन्दी भाषा के सम्बंध में यह बात कभी भी सत्य नहीं हो सकती हैं कि इंटरनेट पर हिन्दी में बहतरीन सामग्री नहीं हैं।

विष्व स्तर पर हिन्दी भाषा

आपने कई पुस्तको में, लेखों में, पत्रिकाओं में पढ़ा होगा या फिर कहीं पर सुना होगा की हिन्दी भाषा दुनिया की तीसरे नम्बर की भाषा हैं। जबकी वास्तव में हकीकत यह है कि पहले नम्बर की भाषा अंग्रेजी तथा दूसरे नम्बर की बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही हैं। जबकि कहने वाले कहते हैं। कि चीनी दूसरे नम्बर और हिन्दी तीसरे नम्बर की भाषा हैं। यह उनका मत गलत हैं क्योंकि चीनी भाषा जानने वालो की संख्या हिन्दी भाषा जानने वालों से काफी कम हैं। शुद्ध चीनी हिन्दी भाषा की तुलना में कम बोलते हैं। इस प्रकार हिन्दी भाषा दूसरे नम्बर पर ही हैं। यदि हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाये तो विदेशों में हिन्दी जानने वालों एवं सीखने वाले व्यक्तियों में वृद्धि हुई हैं। वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका हैं कि हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं की तुलना में अति सरल और शुद्ध हैं। हमारी भाषा हिन्दी में एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती हैं और वह अक्षर अपना अलग ही महत्व रखता हैं। यह एक वैज्ञानिक पद्धति हमारी हिन्दी भाषा में है वह अन्य भाषाओं में नहीं पाई जाती हैं। अंग्रेजी भाषा को देखे तो एक ही ध्वनि से कितने ही प्रकार के अक्षर बनते हैं। जैसे 'ई' ध्वनि के लिए मम होना चाहिए जबकि`मम ए`पदए जमंए ंमल इन सभी में एक ध्वनि में अलग–अलग अक्षरों का प्रयोग हुआ हैं। जो किसी को भी याद करने में कठिनाई देता हैं। जबकी हिन्दी भाषा में ऐक ध्वनि का एक ही शब्द होता हैं। जो अंग्रेजी की तुलना में सरल हैं। सोचने वाली बात यह हैं कि ऐसी अंग्रेजी भाषा हमारे बच्चों को चार–पाँच सालों में सिखा दी जाती हैं। लेकिन इतनी सरल और शुद्ध हिन्दी भाषा को सिखाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता हैं। आज के समय में हमारे बच्चे कॉलेजो में पहुँचकर भी हिन्दी की मात्राऐं गलत लगाते हैं। यह एक विचारणीय बिन्दु हैं कि हमारी हिन्दी के प्रति किस प्रकार की सोच हैं। हम हिन्दी को सीखने का कोई प्रयास ही नहीं करते हैं। जबकि हिन्दी अन्य भाषाओं की तुलना में बहुत सरल और आसान हैं। इसमें दोष किसका हैं। क्या इस पर विचार नहीं किया जाना चाहिए? विश्व स्तर पर देखे तो इजराइल जैसे देश में भी हिन्दी को बढ़ावा दिया जा रहा हैं। हिन्दी को बढ़ाने के लिए नये–नये कदम उठाये जा रहे हैं। इजराइल में एक भारतीय उद्योगपति ने यहां हिन्दी भाषा सीखने वाले विद्यार्थीयों के लिए 33 हजार डॉलर का अनुदान दिया। यह अनुदान इजराइल के 'तेल अवीव' विश्वविद्यालय में हिन्दी दिवस 2016 के समारोह पर दिया हैं। यह व्यापारी हीरो का व्यापरी हैं। इस विद्यालय में हिन्दी में अच्छे अंक लाने पर हिन्दी भाषा पर पकड़ मजबूत करने और हिन्दुस्तान की 5 साल तक यात्रा खर्च दिया जायेगा जिससे हिन्दी को प्रगति मिलेगी। इस अनुदान को प्राप्त

करने के लिए विद्यार्थी को ''कौन भारत जायेगा'' नामक प्रतियोगिता के द्वारा चयन किया जायेगा। यह प्रतियोगिता कौन बनेगा करोड़पति प्रतियोगिता के आधार पर रखी जायेगी। यह अनुदान प्राप्त करने वाले छात्र के साथ विश्वविद्यालय का हिन्दी जानने वाला एक पूर्व छात्र भी भारत आयेगा। इजराइल के उद्योगपति भारतीय संस्कृति से जुड़े रंजीत बारमेजा ने कहा कि हमारे लिए यह गर्व की बात हैं कि इजराइल में बहुत से लोग हमारी हिन्दी भाषा सीख रहे हैं। इससे ज्ञात होता हैं कि दुनिया में हिन्दी भाषा का प्रचलन हैं और विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा सुदृढ़ हैं। बस हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की पहल करनी चाहिए। क्योंकि यह इसकी अधिकारी पूर्ण रूप से हैं।

संदर्भ सुची

- अक्षरा पत्रिका–जनवरी 2011 – पृ. सं. 23
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू वेब दुनिया बुधवार 5 अक्टुबर 2016
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू वेब दुनिया बुधवार 5 अक्टुबर 2016
- राजभाषा विमर्श – वीरेन्द्र परमार – पृ. सं. 04
- राजभाषा विमर्श – वीरेन्द्र परमार – पृ. सं. 05
- वही
- समाचार पत्र दैनिक भास्कर – दिनांक 10 सितम्बर 2015 पृ. सं. 01
- वही
- अक्षरा पत्रिका–दिसम्बर–अक्टूबर 2015 अंक 140 – पृ. सं. 78